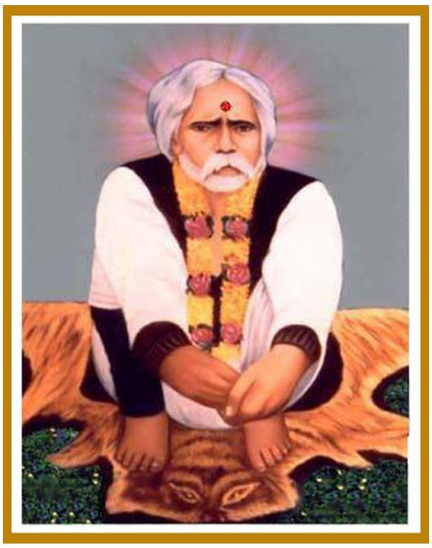

OM SHRI GURU PARAMATMANE NAMAH

MANOHAR JIVAN DARSHAN

SHRI SHRI 1008 SHRI MANOHAR DAS AGHORI

जनम (प्रगटीकरण) - Birth (Manifestation)
भाद्रपद शुक्ला - Bhadrapada Shukla
जलझुलनी एकादशी - Jaljulni Ekadashi
रात्रि ११ बजे पुष्य नक्षत्र में - 11 pm in the constellation Pushya
सम्वत् १९५२ (सन् 1894) - Samvat 1952 (AD 1894)

सत्यलोकवास (निर्वाण) - Satyalokwas (Nirvana)
अगहन सुदी ६ मंगलवार - Agahan Sudi 6 Tuesday
सुबह ५ बजे - 5 am
सम्वत् २०१५ (16 दिसम्बर 1958) - Samvat 2015 (16 December 1958)

WWW.AGHORI.IT

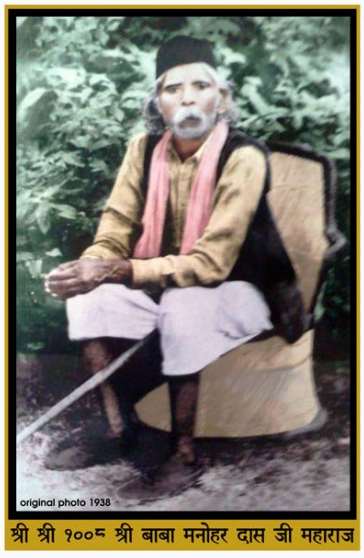

श्री श्री १००८ श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज

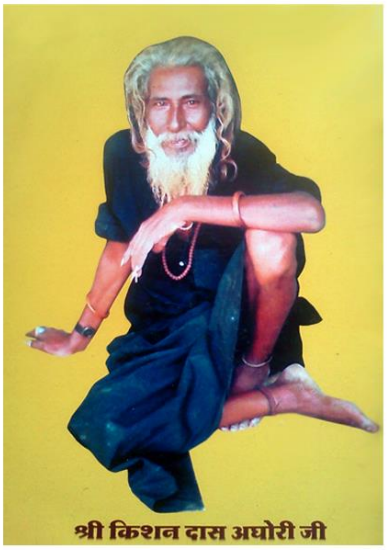
श्री किशन दास अघोरी जी

This book is the cleaning job done on photocopies of an original book,
now unobtainable, recovered by Radhika Dasi Aghori.
Some parts of the book were not legible necessitating a restoration.

In memory of Baba Manohar Das Ji, Baba Kishan Das Aghori guru's.

With love and devotion
Govinda Das Aghori

Questo libro è il lavoro di pulizia fatto su delle fotocopie di un libro originale,
ormai introvabile, recuperato da Radhika Dasi Aghori.
Alcune parti del libro non erano ben leggibili rendendo così necessario un restauro.

In ricordo di Baba Manohar Das Ji guru di Baba Kishan Das Aghori.

Con amore e devozione
Govinda Das Aghori

संस्मरण खण्ड

MEMOIRS

संस्मरण खण्ड के सम्बन्ध में निवेदन

यह संस्मरण खण्ड श्री श्री 1008 श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज के जीवन से जुड़ी हुई ऐसी सत्य घटनाओं का संकलन है, जिनसे हमें उनके जीवन चरित्र से सम्बन्ध रखने वाले गोपनीय एवं अलौलिक रहस्यों की जानकारी होती है, जो अब तक कुछ ही महानुभावों के स्मृति पटल पर अंकित थीं। इन संस्मरणों के अध्ययन से हमें यह ज्ञात होगा कि वह एक महान योगी एवं सिद्धभक्त थे, भूत भविष्य एवं वर्तमान, तीनों कालों का उनको पूर्ण ज्ञान था वे अनोखे भविष्य वक्ता थे उनके मुख से निकला हुआ प्रत्येक वचन सत्य होकर रहता था। उनमें मृत प्राणियों को जीवन देने रोगियों के असाध्य रोगों को दूर करने निःसंतानों को संतान-प्रदान करने दूसरे के मन की भावना को जान लेने एवं निर्धनों को अपनी कृपा दृष्टि से धनवान वना देने की अपूर्व शक्ति थी। इससे पूर्व जीवन-दर्शन खण्ड में जो कुछ भी बाबा की महिमा में लिखा गया है वह पूर्ण यथार्थ लेखन है, इसकी पुष्टि यह संस्मरण खण्ड कर सकेगा। पाठकों को यह खण्ड पढ़कर लगेगा कि जो कुछ जीवन-दर्शन खण्ड में कहा गया है उस में कुछ भी अतिश्योक्ति नहीं है। संस्मरण खण्ड में जो संस्मरण लिखे गये हैं उनको सुनाने वाले महानुभाव बाबा के समकालीन एवं उनकी नित्य सेवा में संलग्न रहने वाले वयोवृद्ध लोग हैं। हमने घण्टों उनके पास वैठकर संस्मरणों को सुना एवं लिपिबद्ध किया है। जैसा वर्णन उन्होंने हमें सुनाया प्रायः वैसा ही हमने लिखा है। बाबा के द्वारा कहे गये वचनों को उन्हीं के शब्दों, लिखने का प्रयास किया है। इस खण्ड में जिन संस्मरणों को लिखा जा रहा है उनके सुनाने वाले सज्जनों में श्री बृजलाल गुप्ता (विरजू जी) श्री जगदीश प्रसाद जी पुरोहित स्वः गंगा सहाय नाई, श्री नत्थी लाल ख्वास एवं श्री दौलत पहलवान (किड्डू) आदि प्रमुख हैं। मैं इन सभी सज्जनों का हृदय से आभारी हूँ कि जिन्होंने अपना समय देकर इन संस्मरणों को लिपिबद्ध कराया। इस कार्य में मेरा सहयोग करने वाले आनन्द मण्डल के साथियों विशेष रूप से महेन्द्र शर्मा मैनावास वाले को मैं धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि बिना सहयोग के यह संस्मरण खण्ड लेखन सम्भव नहीं होता।

विनित

केदार नाथ शर्मा (खूंट वाले)

लघुकाशी वैर जिला, भरतपुर (राजस्थान)

॥ ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः ॥

बाबा मनोहर दास जीवन-दर्शन

संस्मरण संख्या 1

जन्म भूमि की ओर

बाबा पुलिस सेवा को छोड़कर उदयपुर की तरफ जहाँ पर श्री गणेश दासजी महाराज की तपोस्थली थी पहुँचे। जैसा कि पहले बताया जा चुका है बाबा ने उनसे विधिवत दीक्षा ली तथा बताये हुए तरीके से अपनी साधना की, आत्म साक्षात्कार किया। लगभग 12 वर्ष बाद जब ये पूर्ण सिद्धावस्था पर पहुंच गये थे पुनः अपनी जन्म स्थली लघु काशी वैर पधारे। यहाँ के निवासियों ने इनका बड़ा भारी सम्मान किया। अब ये आचार्य रूप लम्बे केश कुर्त्ता धोती पहने बगल में गीता की पुस्तक आपको सहस्त्र नाम एवं गीता लगभग कंठस्थ थे।

कबीर उपासना पद्धति तथा अन्य उपनिषदों का भी आपने विशेष स्वाध्याय किया। जब ये लौटकर आये थे तो कुछ लोगों ने इनकी शिकायत पुलिस, विभाग में की। यहाँ पर ड्यूटी से बिना सूचना किये बिना चार्ज संभलाये चले जाने के कारण इनके वारंट कट चुके थे। श्री पीतम चन्द्र जी तथा अन्य लोगों ने जो पुलिस सेवा में कार्यरत थे। इनकी सूचना पुलिस विभाग को दी। पुलिस विभाग अपनी कार्यवाही पर अमल करे उससे पहले ही नारायण टीडी के प्यारे लाल जैन, श्री गिरजि सिंह पुरोहित, उमराव जी पण्डा एवं शुक्ल जी आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने पुलिस विभाग में जाकर कहा कि अब वे साधु हो चुके हैं। अतः मानवता की दृष्टि से इन्हें दोषमुक्त कर दिया जाये। इन लोगों की प्रार्थना पर ध्यान देकर और बाबा की तपस्या एवं दिनचर्या से प्रभावित होकर इनका मामला रफा-दफा कर दिया।

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण संख्या 2

अन्धे को आँख

बयाना के निवासी श्री माँगी लाल चोबदार जी बाबा के साथ पुलिस विभाग में कार्य कर चुका था। बाबा से अक्सर कहा करता था कि पेन्शन मिलने के बाद मैं भी साधु हो जाऊंगा और भगवान का भजन करूंगा। पेन्शन होने के बाद उसने भगवान का भजन नहीं किया। साधु होने के बजाय गृहस्थ में और लिप्त हो गया। देवयोग से कुछ दिन पश्चात् वह अन्धा हो गया उसने बाबा की तपस्या एवं सिद्धियों के बारे में लोगों से सुन रखा था। एक दिन वह अपने बच्चों को बयाना से पैदल ही लेकर बाबा के दर्शनार्थ वैर आया ज्योंही बयाना दरवाजे में पैर रखा उसकी आँखें पूर्ववत देखने लगीं।

करत प्रवेश मिटे दुःख दावा।

जिमि जोगी परमारथ पावा॥

के अनुसार बाबा की तपोस्थली में प्रवेश करते ही उसकी आँखों में ज्योति आ गई और व सुखी हो गया। प्रताप गंगा के किनारे स्थित बाबा के दर्शन किये। वह अक्सर कई-कई दिन तक बाबा के पास ही पड़ा रहता था। उनकी सेवा में रहता था। ऐसा कहते हैं कि जब वह वापिस बयाना पहुँचता तो अंधा हो जाता और जब बाबा के दर्शनार्थ वैर आता तो उसे पुनः दिखाई देता। यह संस्मरण मुझे श्री वृजलाल गुप्ता (बिरजू) ने सुनाया जो यथार्थ है।

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण संख्या 3

अनौखे भविष्य वक्ता

एक दिन की बात है कि बाबा अपने धूना की छत्त पर बैठे थे। प्रातः काल का समय था। करीब नौ बजे थे। अचानक बाबा खड़े हो गये कहने लगे–''छौराओ। दोपहर पीछे, कुआं गिरेगा, कुएँ में तरैया डूबेगी कुआ में गिरकर जो मरता है उसकी अकाल मृत्यु होती है, हत्यारी पक्ष का काम हो गया और तू संभलना। ऐसा कहकर बाबा चुप हो गये उस समय धूना पर मेरे (बृज लाल) साथ परसादी छीपी और अनेकों व्यक्ति थे। सभी लोग अपने-अपने घरों को चले गये दोपहर पीछे जब पुनः लौटकर धूना की शाला में वैटे थे। बाबा उस समय शाला में ही विराजे हुऐ थे। हमारे पहुँचने पर खड़े हो गये और कहने लगे–''लाला तुम कहीं जाना मत मैं अभी आता हूँ बाजार से दही लेने जा रहा हूँ।

बाबा अक्सर कहा करते थे–

(1)

''दीत कूं पान, सोम कूं दर्पण।

मंगल धनियाँ कीजिये अर्पन॥

(2)

बुद्ध मिठाई बृहस्पति राई।

कहें शुक्र मोहि दही सुहाई॥

(3)

जो शनिवार को घृत पाऊँ।

काल मार लौट कर घर आऊँ॥

अर्थात् शुक्रवार के दिन दही खाना अच्छा रहता है। ऐसा सोचकर वे दही लेने आप ही चल दिये। हमें कहीं नहीं जाने का आदेश किया और चले गये। थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति रोता चिल्लाता हुआ धूना की तरफ आया। तबेले वाले कुआं की तरफ इशारा करते हुए कहने लगा कुआं में गिर गई कोई बचाओ उसकी पत्नी किसी बात पर नाराज होकर तबेले वाले कुआ में कूद गई। हम वहाँ से भाग कर तबेले वाले कुआं पर पहुंचे तो देखा कुँए के पानी से बुलबुले उठ रहे थे। मैंने कुआं उतरने के लिए ज्योंही कमीज उतारना चाहा तो उसी समय बाबा के वचन जो लगभग दो घंटे पहले बोले थे मुझे याद आ गये "आज दोपहर पीछे कुआं गिरेगा कुएँ में तैरय्यां डूवेगी कुँआ में जो गिर कर मरता है उसकी अकाल मृत्यु होती है। हत्यारी पक्ष का काम हो गया तूं संभलना।" मैं फौरन संभल गया। कूदने का इरादा छोड़ दिया यद्यपि उसके लड़के ने मुझसे काफी आग्रह किया फिर भी मैं नहीं कूदा क्योंकि हन हुजूर के आज्ञा से पाबन्द थे। इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि बाबा भविष्य वक्ता थे। उन्हें तीनों कालों का स्पष्ट ज्ञान था। दो घंटे बाद क्या होना है। इसकी जानकारी बाबा जैसे त्रिकालदर्शियों को ही हो सकता है।

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 4

भाव भक्ति का भोग ही श्रेष्ठ होता है

बाबा अक्सर कहा करते थे कि–"हम भाव गति का खाये हैं। यदि कुभाव गति का खाये तो जिन्दे ही मर गये"

सही भी है संसार में वस्तु का महत्व नहीं हुआ करता है, भाव का महत्व होता है। वह कहा करते थे कि-"भाव से जो पाषाण को पूजे नारायण मिल जाये"

कैसी भी मूल्यवान वस्तु बिना भाव के महत्त्व नहीं रखती। वे कोई भी वस्तु ऐसी स्वीकार नहीं करते थे जो बिना भाव के बिना श्रद्धा के, मान बड़ाई के सहित लाई गयी हो। वृजलाल जी अपना संस्मरण सुनाते हुए कहते हैं कि दिन बाबा कैला हलवाई की दुकान के सामने विराजे हुए थे, अचानक मेरे मन में विचार आया कि बाबा को दूध पिलाया जाये। सबसे पहले मेरे दिमाग में एक पाव दूध ले जाने का संकल्प हुआ लेकिन लोकलाज की वजह से कि दुनियाँ क्या कहेगी पावभर दूध को लेकर चला है, मैं आधी मेर दूध कुल्लड़ में भरवाकर मलाई डलवा के बाबा के पास ले गया, बाबा ने कुल्लड़ को हाथ में पकड़ लिया। कुल्लड़ को आधा मापकर अपनी कटोरी में कर लिया, आधा दूध कुल्लड़ में रहने दिया और मुझसे बोले–"लै! ये तेरा है मैंने अपना भाग ले लिया, इसे तू पी जा" मैं देखता रह गया कि बाबा ने मेरी मन की बात को जान लिया था। वह जानते थे कि मेरा वास्तविक भाव एक पाव दूध का ही था।

इससे सिद्ध होता है कि बाबा महाराज घट-घट की बात जानते थे। बिना भाव का भोग उन्हें अच्छा नहीं लगता था। उसे वे अपनी साधना में विघ्न समझते थे।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 5

मेला ठेला जाला जात बरात

एक बार आगरा के नूरी दरवाजे का विशम्भरदयाल कबाले नवीश जो बाबा का परम भक्त था। वह बाबा कि तन-मन-धन से सेवा किया करता था। जाड़ों में बाबा को ऊनी वस्त्र, गर्मियों में मलमल के कुर्ते, धोती जूते तथा अनेक प्रकार से, भाव भक्ति से बाबा कि सेवा किया करता था। उसके लड़के की आगरा में शादी थी। शादी में सम्मलित होने के लिए बाबा को लिवाने वैर आया। बाबा उसके ऊपर पूरे महरवान थे। शादी का प्रस्ताव आते ही स्वीकार कर लिया गया। बोले–"किड्डू हमारे विस्तर बस में रख दें, हम बारात करने आगरा जाते हैं।"

हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि बाबा कहीं विशेष रूप से आते-जाते न थे। वे अक्सर कहा करते थे–

"लाला! मेला ठेला जाता बारात

नाका घाटा चढाव पडाव"

इनसे बचना चाहिए–लेकिन आज स्वयं ही बारात के लिए तैयार हो गये। अपना विस्तर तक बस में रखवा दिया। आप दामोदर जी के मन्दिर से चलकर डेरानवाली कुइंया के पास एक पत्थर पर बैठ गये। इधर-उधर से लकड़ी इकट्ठी करने लगे, धूना शुरू हो गया। मोटर में विस्तर रख कर किड्डू नाई मेरे पास आया और बाबा के आगरे जाने का वृत्तांत मुझे सुनाया, पुराने बस स्टेण्ड से चलकर बाबा को बैठाने के लिए डेरानवाली कुइया के पास बस रुकी, पहले बस इसी मार्ग से चला करती थीं। बाबा से विश्भ्भर दयाल ने बस में बैठने का निवेदन किया। बाबा मनमौजी थे। उनका "ज्ञान ध्यान न्यारा था"। चलकर बस के सामने आये, जैसे एक सिपाही परेड करता है। कदम ताल करते हुए बस के सामने आकर सलूट किया और बस की परिक्रमा देकर, पुनः अपने धूने पर बड़ के पेड के नीचे ही जाकर बैठ गये। विशम्भर दयाल कबाले नवीश ने विशेष आग्रह किया लेकिन अब क्या होता है "लहर पलटा खा चुकी थी।" बाबा वहाँ नहीं गये। वास्तविकता यह थी कि बाबा की आगरा चलने की तैयारी को देखकर शिम्भूदयाल कबाले नवीश आगरे वाले के मने में ऐसा अहंकार आ गया था कि मैं बाबा का कितना भक्त हूँ कि बाबा अपनी मर्यादा को तोड़कर मेरे साथ बारात में चलने को

तैयार हो गये हैं। ऐसे वह किसी के साथ नहीं जा सकते। हमने देखा कि उसकी बातों से अहंकार झलक रहा है, बाबा घट-घट की जानने वाले थे विशम्भर दयाल के भाव को देखकर चलने को तैयार हुए थे और कुभाव (अभिमान) देखकर अपने विचार बदल लिया। किसी ने ठीक ही कहा है–

"संतन कहा सीकरी काम

आवत जात पन्हैया टूटै

विसर जात हरिनाम..।" इस घटना से सिद्ध होता है कि हुजूर के दरबार में भाव की पहचान थी और भगवान भी भाव को ग्रहण करते हैं।

"भावों ग्रहते जनार्दनः"

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 6

साम्प्रदायिक दंगों का पूर्वाभास

सन् 1947 में जब हमारा देश आजाद हुआ उसके परिणान स्वरूप देश का विभाजन हुआ। पाकिस्तान बन जाने के कारण हिन्दू तथा मुसलमानों को इधर से उधर आना-जाना पड़ा। देश में रक्त पात तथा खून खरावा हुआ। बाबा श्री मनोहरदासजी महाराज को साम्प्रदायिक दंगों का पूर्वाभास हो चुका था। वह अपनी मस्ती में कहा करते थे–

"खून की नहरें बहेंगी" ये उनकी भविष्य वाणी सत प्रतिशत सही रही। सन् 1958 में भारत तथा पाकिस्तान में भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुऐ, लाखों आदमी कत्ल कर दिया गये।

उल्लेखनीय यह है कि आबादी पूर्व ही सन् 1947 में ही दावा ने अपने भक्तों से इन दंगों के बारे में पूर्व में ही आभास करा दिया था। जिसकी परिणिति 1948 में साम्प्रदायिक दंगों के रूप में दिखाई दी। इससे यह सिद्ध होता है कि बाबा को भूत भविष्य तथा वर्तमान का पूरा ज्ञान था। वे अनौखे भविष्य वक्ता थे भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास दे दिया करते थे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 7

साधु अवज्ञा का फल

एक बार बाबा का आसन तहसीलदार साहब की हवेली के चौक में लगा हुआ था। उनके साथ दीप चन्द, चन्दन कटारा हवेली में साथ अर्दली में रहते थे। बाबा की रहनी-सहनी से तहसीलदार बहुत परेशान था क्योंकि बाबा के पास भक्तों का तांता लगा रहता था। रात-दिन धूना चलता रहता था। तहसीलदार अपने कर्मचारियों से बोला कि बाबा को बाहर निकला कर दरवाजे का किवाड़ बन्द कर दो।'' उनके सारे कर्मचारियों ने तहसीलदार साहब से कहा-''यह हमारे वश की बात नहीं है।'' हम बाबा से बाहर जाने की भी नहीं कह सकते। कुछ दिन तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन बाबा लघु शंका को बाहर निकले। तहसीलदार ने मौका पाकर दरवाजे के किवाड़ बन्द करवा दिये। बाहर से बाबा दरवाजे खटखटाने लगे कहने लगे अरे छोरा! रूप नारायण किवाड़ खोल'' लेकिन तहसीलदार जी कब खोलने वाले थे। उन्होंने किवाड़ नहीं खोले अन्त में बाबा हवेली के पास बगीची में जा बैठे। कहते हैं कि अगले दिन तहसीलदार साहव के स्थानान्तरण के आदेश आ गये।

साधु अवज्ञा तुरत भवानी।

कर कल्याण अखिल के हानि॥

तहसीलदार को ही हवेली छोड़कर जाना पड़ा। इससे सिद्ध होता है दूसरों को खाई खोदने वाले को स्वयं ही उसमें कूदना पड़ता है। तहसीलदार साहब को संत के किये हुए अपमान के परिणाम स्वरूप स्वयं को ही निकल कर जाना पड़ा! ये सब बाबा साहब की तपस्या के तेज का ही प्रभाव था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण संख्या 8

इधर हम उधर तुम.....

एक बार राजा श्री गजेन्द्र सिंह अपने फार्म (चरन दास का नगला) से अपने ट्रैक्टर पर बैठ कर वैर आ रहे थे। ट्रैक्टर जब बाबा मनोहर दास के धूना के पास आया तब बन्द हो गया। बाबा उस समय पैरों में गैटिस बांधे हुए पुलिस जैसी परेड कर रहे थे। बोले ''भाई सहगाब क्या हो गया।'' राजा गजेन्द्र सिंह ने कहा कि बाबा ट्रैक्टर बन्द हो गया। बाबा नीचे उतरे और ट्रैक्टर में बैठ गये और बोले ''अब चलाओ'' ट्रैक्टर स्टार्ट हो गया और चल कर किले के पास पहुंचा। जहाँ बाबा का मन्दिर बना हुआ है। उस समय खाली प्लाट पड़ा हुआ था। बाबा बोले–हरों को छोड़ दो और ट्रैक्टर को प्लाट में घुमवाया जब चक्कर पूरा हुआ तो बोले–''किले के

उस दरवाजे पर तुम रहो और इधर मैं रहूंगा। राजा गजेन्द्र सिंह ट्रैक्टर को लेकर चले गये। समय गुजर गया और बाबा सत्यलोक को सिधार गये। उस दिन मंगलवार अगहन सुदी छट्ट (छः) दिनांक : 16.12.1958 प्रातः 6.00 (ए.एम.) बजे। बाबा ब्रह्मलीन हो गये। राजा गजेन्द्र सिंह अपने फार्म पर थे, उन्हें रात्रि में स्वप्न हुआ कि तुम्हारे भाई गुजर गये हैं। उन्होंने सोचा भरतपुर में गोपाल गढ़ में उनके भाई रहते हैं शायद उनमें से गुजर गये हों। ऐसा सोचकर वहाँ से पैदल ही चल दिये। इधर लोगों ने उन्हों बुलाने को तारा की (जीप) कार भेजी, लेकिन वे वहाँ से पैदल चल चुके थे। राजा गजेन्द्र सिंह वैर आ गये। उन्हों बाबा के परम धाम सिधारने की सूचना मिली। बाबा के अन्तिम संस्कार के लिए स्थान जिसमें बाबा ने स्वयं ट्रैक्टर चलवाया था। उसी स्थान को चुना। राजा गजेन्द्र सिंह बोले यह स्थान बाबा ने पहले ही ले लिया था। वर्तमान में बाबा के मन्दिर के दक्षिण में राजा श्री गजेन्द्र सिंह जी का स्मारक बना हुआ है।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 9

दरोगा को चमत्कार

हाकिम सिंह थानेदार करौली का रहना वाला था। वह बाबा के प्रति भक्ति भाव रखता था। बाबा का धूना उस समय गिरधारी दास के मन्दिर (जहाँ पहले गर्ल्स स्कूल चला करता था, रामा पंडित के सामने) में लगा हुआ था और भक्तों का समुदाय बैठा हुआ था। प्रातः काल 10.00 बजे की घटना है। थानेदार हाकिम सिंह सिपाईयों के सात बाबा के पास पहुँचे। दण्डवत् प्रणाम किया और बाबा के पास बैठे भक्तों से थानेदार के गर्व, में व्यर्थ की पूछताछ करने लगे। उनमें से कुछ एक को पकड़ कर ले गया और थाने में ले जाकर बैठा दिया। वहाँ पर पुलिस वालों ने तलाशी लेकर पैसे छीन लिए और छोड़ दिया। फिर वे लौटकर बाबा के पास आये हालात सुनाये। उधर थानेदार हाकिम सिंह के पेट में जोर से दर्द चलने लगा। दर्द के मारे छटपटाने लगा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने लालपुरनी की छोरी चन्दा को बाबा के यहाँ उन्हें वुलवाने के लिए भेजा। बाबा के पास आकर चन्दा बोली–''बाबा थानेदार साहव के पेट में दर्द चल रहा है और तुम्हें बुलाया है'' उस समय मैं (बृजलाल गुप्ता) बाबा की रोटी लेकर पहुंचा ही था। बाबा मुझ से बोले छोरा? ''धुना में से भबूत (विभूत) ले जा और सात नाम का मन्त्र जो तुम्हें बतलाया है, उसे सात बार दरोगा जी के पेट पर फेर देना दर्द सही हो जायेगा'' मैंने ऐसा ही किया। चन्दा के सात थानेदार जी के निवास पर गया वर्तमान में खादी भंडार की दुकान चलती है और (बाबा के आज्ञानुसार दरोगा जी के पेट पर सात नाम का मंत्र) ॐ अखेनाम, अभय नाम, अजर नाम, अमरनाम, सत्य नाम, समार्थ नाम,

ॐ नाम साह नाम, बोले कर विभूत लगा दी। दरोगा जी के पेट का दर्द शान्त हो गया। दरोगा जी ने चाय का आग्रह किया। लेकिन मैंने नहीं पी, मैं चला आया। हुजूर जानने में तो कुछ जानता नहीं परन्तु मुझे डाक्टर बना दिया।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 10

हाय का पैसा है, दुःख तकलीफ देता है.....

बाबा के बारे में प्रायः लोग कहा करते थे कि उनके पास लोग सट्टे का दडा लेने के लिए दूर-दूर से आया करते थे। सट्टे के बारे में बाबा के स्पष्ट विचार थे। वह कहा करते थे ''लाल यह हाय का पैसा है। दुःख तकलीफ देकर चला जाता है ऐसा काम नहीं करना चाहिये, परिश्रम की कमाई फलीभूत होती है।''

लोग बाबा की वाणी को अपने मन से फलाकर दडा लगा दिया करते थे। और अपनी भावनानुसार और कर्मानुसार फल प्राप्त करते थे। एक बार का प्रसंग है कि किले में खजाने पर एक हैड (हेड कांस्टेबल) रहता था। बाबा ने उसका नाम ''अमीरअली'' रखा हुआ था। वैसे वह जाट घराने से था। लम्बा चौड़ा जवान था। बाबा का उस पर बहुत प्यार था। वह बाबा के पास आया जाया करता था। बाबा के पास जो सेवा में सामग्री आती थी, उसमें से बिना पूछे ही इस्तेमाल करने लग जाया करता था। थोड़े दिन बाद वह मुझसे बोला कि ''बाबा को कभी खजाने पर लाओं। इनसे दडा (सट्टे का नम्बर) लेंगे। मैंने कहा यह गलत काम क्यों करते हो, उसने कहा मेरे एक हजार रुपये सट्टे में जा चुके है।'' अगर पैसे किसी तरह व वापिस आ जायें तो अच्छा रहे। मैं बोला, ''हुजूर की मर्जी, हुजूर जाने, मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मैं बाबा से नहीं कह सकता। बाबा उस समय महादेव जी के मन्दिर पर बैठे थे। (राम हलवाई की दुकान के सामने) बाबा अक्सर मेरे नाम से मुझे नहीं बुलाकर मेरे बड़े भाई ''मन्नू'' के नाम से बुलाते थे। बाबा की यह आदत थी कि प्रायः लोगों का नामकरण अपनी तरफ से कर दिया करते थे और चाहे कितने समय बाद वह व्यक्ति बाबा के पास जाये उसी नाम से पुकारा करते थे। मेरा भी नाम बाबा ने ''मन्नू'' रख लिया था। बाबा ने मुझे आवाज लगाई–''मन्नू इधर आओ''। मैं बाबा के पास पहुंचा। वे मुझसे बोले, ''आज गुरुजी वाली ढूंढने चलते हैं।'' अक्सर वह हड्डियों को गुरुजी वाली कहते थे। बाबा और हम दोनों चल दिये, मेरे हाथ में तम्बाकू की थैली और जलता हुआ उपला चिलम थमा दिया। आगे-आगे बाबा और पीछे से मैं चलता गया। बाबा किले का चक्कर लगाते हुए खैर (किले के पीछे की जगह) से गुजर रहे थे कि अचानक बीडी नं. 27 का कागज पड़ा हुआ देखा बाबा ने उसे उठा लिया मुझसे बोले–लाला! यह 72 नम्बर है इसे

जेब में रख ले। मैं बोला–हुजूर ये 72 नहीं 27 नम्बर है वे बोले ''तेरा ज्ञान व्यारा है।'' बाबा अपनी धुन में चलते रहे किले के दक्षिण दिशा में एक कुइया है उस पर बैठकर तम्बाकू बनवाई और पीने लगे। उस समय किले के आसपास का स्थान बड़ी-बड़ी झाड़ियों से घिरा हुआ था। नितान्त एकान्त और डरावना स्थान था। दिन में भी लोग जाने से डरते थे। यह घटना सायं 3.00 बजे की है। चिलम पीकर वहाँ से किले के दक्षिणी दरवाजे पर पहुंच गये। मैं अपने मन में सोचने लगा कि बाबा शायद हैड साहब की इच्छा पूरी करने जा रहे हैं क्योंकि मुझसे हैड ने बाबा से दड़ा दिलाने एवं खजाने पर बाबा को लाने की बात कही थी। बाबा मुझसे बोले ''चेले'' मैं बोला–''चेले'' बाबा आगे वढ़ गये, के दक्षिण दरवाजे के पास नीम चबूतरे पर बैठ गये। (आज जहाँ क्रापट स्कूल है) और बोले–''यह साँवलिया साँड वाले का चवूतरा है। इस पर हमने दो पेड़ नीम के लगाये हैं। हैड साहब ने बाबा के आने की बात सुनी और तुरन्त उधर आ गये और मुझसे बोले कि यार खूव, बाबा को लाये।'' मैं बोला–मैं कौन होता हूँ लाने वाला, हुजूर की अपनी मर्जी है बाबा को वह प्रार्थना करके खजाने पर ले गया। कुर्सी पर बैठा दिया। हैड मुझसे बोला कि, बाबा से कोई दडा लिखवा दो और मुझे एक कताम और एक कागज दे दिया मैंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया क्योंकि बाबा मुझसे कहा करते थे कि ''यह हाथ का पैसा। दुःख तकलीफ देकर जाता है। परिश्रम की कमाई रंग लाती है। हैड मुझसे बारम्बार सट्टे लिखाने के लिए आग्रह करने लगा। आखिर में मैंने कागज लेकर बाबा के हाथ में थमा दिया और बोला हुजूर कुछ लिख दीजिए। बाबा मुझसे बोले– ''अरे सेठ के लड़के! तू ये क्या कहता है, यह काम ठीक नहीं है।'' हैड ने बाबा से बहुत मिन्नत की, हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बाबा ने कागज हाथ में ले लिया और आँख मींच कर अपने इष्ट विष्णु भगवान का ध्यान किया सहस्त्र नाम के श्लोकों को अपनी धुन में उच्चारण करने लगे वे प्रायः ऐसा ही किया करते थे। कागज में लिखना शुरु कर दिया। इसमें ''82/10'' अंक लिख दिया और बोले ''रिलिफ का कायदा अलग होता है।'' और कागज मुझे पकड़ा दिया और मैंने उसे हैड को दिया। वास्तविकता यह थी जो कागज मुझे बाबा ने खैर में दिया था। वह मेरी जेब में रखा हुआ था। नीम के पेड़ के नीचे उन्होंने जो बात कहीं थी–''यह सांवलिया सांड सात नम्बर। दो पेड़ = दो अंक = 72 अंक। अगले दिन जो अंक खुला था वह 72 ही था। लेकिन, हैड ने इस गणित को नहीं समझा क्योंकि वह ''रिलिफ'' शब्द का अर्थ नहीं जानता था। मेरे पूछने पर उर्दू जानने वाले लोगों ने बताया रिलिफ का अर्थ ''घटाना'' होता है। हैड ने 82 + 10 92 लगा दिया था।

मुझे लगाना नहीं था सो किसी को कुछ भी नहीं मिला क्योंकि बाबा की वाणी का अर्थ हैड नहीं समझ सका और हुजूर ने मुझसे सट्टा लगाने का हुक्म कर रखा था। वास्तविकता यह थी कि पहले एक दो साल मुझे भी सट्टे लगाने की आदत पड़ गई थी और मैं परेशान रहा करता था। रात दिन सट्टे की धुन में रहा

करता था, बाबा न एक दिन कहा कि ''लाला'' इस आदत को छोड़, तू मौज करेगा।'' मैंने उसी दिन से दडा लगाना छोड़ दिया।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 11

योगियों के जनरल....

मथुरा निवासी फौज में एक कर्नल थे। जिनकी ड्यूटी उस समय वर्मा (रंगून) में थी। वह वहाँ पर जंगलों में एक साधु के पास आया-जाया करते थे। वह साधु बहुत चमत्कारी था। कर्नल साहव उनकी बहुत सेवा करते थे एवं श्रद्धा रखते थे। एक दिन कर्नल साहव ने उनसे पूछा कि–''आपके मुकाबले यहाँ और साधु है''? वह महात्मा जी बोले–''जैसे तुम्हारे ऊपर फौज में जर्नल हैं, उसी प्रकार हमारे भी एक जर्नल हैं। वह राजस्थान में वयाना स्टेशन से पश्चिम की ओर वैर कस्बे में विराजते हैं। वे सिद्धों के सरताज हैं।''

कर्नल साहव छुट्टियों में अपने निवास मथुरा आये और वहाँ से चलकर रेलगाड़ी द्वारा बयाना स्टेशन पर उतर कर वैर का रास्ता पूछा। उस वक्त बयाना वैर के लिए एक कच्ची सड़क थी। जिस पर एक या दो मोटर और कुछ तांगे चला करते थे। कर्नल साहव मोटर में बैट गये और वैर के लिए रवाना हो गये। यह वैर की उनके जीवन में पहली यात्रा थी। इधर बाबा महाराज की उस समय भरतपुर दरवाजे बाहर स्थित पुरवनी वाली वगीची में धूनां लगा हुआ था। दोपहर को एक या 1.30 पर अचानक बाबा ने दौलत नाई (पहलवान) और मुझे (बृजलाल) को हुक्म दिया–''कि मोटर से लम्बा तगड़ा जवान, खाकी वर्दी में खाकी विस्तरबंद लिए हुए आ रहा है। उसे यहाँ लिवा लाओ।'' हम दोनों वहाँ से चलकर बस स्टेण्ड पर आये और ज्योंही वहाँ पहुँचे त्योंही बयाना से बस आकर रुकी। उस समय नहर के किनारे शिवालय, रामजीलाल अड्डे वाले की दुकान के पास (अब राम और शिब्बी की दुकान है) रुका करती थी। बस से बाबा के द्वारा बताया हुआ व्यक्ति जो मिलिट्री ओफिसर जान पड़ता था, उतरा और कंडक्टर से बिस्तर उतरवाने लगा।

दौलत पहलवान ने विस्तरवन्ध ले लिया और उससे कहा कि आपको बाबा ने याद किया है। हमारे साथ चलो। आगे आगे मैं और दौलत थे औप पीछे जवान था।

हम बाबा के यहाँ पुरवनी वाली बगीची पहुँचे और बाबा के दर्शन करके उसने बाबा के चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। वह बाबा से बड़ा भारी प्रभावित हुआ। उसने बाबा की काफी सेवा की और आशीर्वाद पाकर वापिस लौट गया।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 12

मृत बछड़े को जीवित करना....

आगरा में पचकुइया पर एक कुम्हार रहता था। वह बाबा की सेवा करता था। एक बार बाबा विशम्भर दयाल कबाले नवीश (नूरी दरवाजा आगरा) के पास ठहरे हुए थे। यह भी बाबा के परम भक्त थे। अक्सर वैर आया करता था और बाबा की सब प्रकार की सेवा किया करता था। बाबा भी उसकी भक्ति से बहुत प्रभावित थे और इस कारण आगरा भी कभी-कभी उसके पास चले जाया करते थे। एक दिन प्रातः काल चार बजे वहाँ से चलकर पचकुइया स्थित उस कुम्हार के घर आये और बोले–''चाय बनाओ। कुम्हार बोला हुजूर ''चाय किसकी बनाऊं, मेरी भैंस का पड्डा मरा पड़ा है। सुबह होने दो, बाजार से दूध लाकर चाय बनाऊंगा।'' बाबा बोला – '' अरे मटा। क्यों झूठ बोलता है? पड्डा भूखा है, उसको दूध क्यों नहीं पिलाता है।'' ''कुम्हार ने कहा'' हुजूर यह वास्तव में मर गया है।'' बाबा बोले-इसको खड़ा करके भैंस के थनों में लगा यह भूखा है।'' बाबा के अधिक आग्रह करने पर इस कुम्हार ने मृत पड्डे को उसके थनों के लगाया। एक अनौखा चमत्कार हुआ, वह पड्डा भैंस का दूध पीने लगा। कुम्हार ने दूध निकला कर चाय बनायी और हुजूर की सेवा की।

उल्लेखनीय है कि कुम्हार के मरणोपरान्त उसके बच्चे भी बाबा में श्रद्धा रखते थे। बाबा के परम शिष्य कुन्दन दास की सेवा में भेंट लाया करते थे। एक बार कुन्दन दास बाबा को हाथ की घड़ी भेंट की। कुन्दन दास ने उससे दूसरी घड़ी और ले ली। कुन्दन दास ने बहुत दिन तक अपने दोनों हाथों में वे घड़ियां बाँधी हुई, अनेक लोगों ने देखी थीं।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 13

कन्या की शादी हेतु मदद....

कठूमर गाँव का एक जैन अजींनवीश था। वह बाबा के पास आया जाया करता था। बाबा भी उस पर महरबान थे। बाबा उसको अपने साथ थाली में खाना खिला लिया करते थे। वह बाबा के पास बार-बार आता-जाता देखकर मैंने उस अजींनवीश से पूछा कि–''तूने बाबा का क्या चमत्कार देखा है, जो तू बार-बार आता है। वह मुझसे बोले कि मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और मेरे एक विवाह

योग्य कन्या है, जिसकी शादी मुझे करनी है मेरे पास पैसों का अभाव है। मुझे बाबा से कुछ दिला दो, जिससे मैं अपनी कन्या की शादी कर सकूं। मुझे सिर्फ आठ हजार रुपये की जरूरत है, आप बाबा से कहकर कोई अंक दिला दो। मैंने कहा "बाबा तुम पर मेहरबान हैं तुम स्वयं ही प्रार्थना करो, उसने जब बार-बार आग्रह किया तो मैंने भी बाबा महाराज से उसे कुछ देने का निवेदन किया। बाबा ने दो अंकों (36, 63) की ओर इशारा किया लेकिन यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं था मैंने कहा हुजूर इसे सही-सही आदेश किजिये। बाबा ने उसे 36 का अंक देकर कहा कि– "किसी को बताना मत, कहना तुम" मैंने उस अजींनवीश से कहा कि बाबा की आज्ञा का उल्लंघन मत करना नहीं तो मुझे बहुत बड़ी हानि हो जायेगी। वह वहाँ से चला गया। अपनी लड़की की शादी करके बाबा के दरबार में उपस्थित हुआ भेंट के लिए बहुत सामग्री और एक बहुत बड़ी गेंदे के फूलों की माला थी जो गले में पहनने पर जमीन तक लटकती थी। बाबा को सामग्री भेंट करने के बाद माला पहनाने लगा। अचानक बाबा खड़े हो गये और बोले–"अरे क्या करता है? इस माला को बृजलाल को पहनाओ।" बाबा ने मेरे गले में माला पहनाने के लिए बहुत जोर दिया, मैं दूर हटता रहा। लेकिन वह नहीं माने और वह माला मेरे गले में पहनवा दी। मैं वास्तविक समझ गया, उसे अंक देने का आग्रह मैंने ही विशेष रूप से किया था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 14

मेरा घर बसाने वाले बाबा ही थे

मेरी शादी लगभग 32 वर्ष की उम्र तक नहीं हो पाई थी। वैसे प्रायः उन दिनों के समाज में बाल-विवाह प्रचलित थे। छोटी उम्र में ही शादीयाँ हो जाया करती थीं। लेकिन मेरी शादी 32 वर्ष की उम्र तक भी न हो सकी थी। इसका कारण मेरी आवारागर्दी में साधु महात्माओं में बैठना ही था।

एक दिन की बात है बाबा धूना उस समय थाने के चबूतरा पर (जहाँ अब शिवालय है। थाने के समने जो पीपल के पेड़ लगे हुए हैं वह बाबा श्री मनोहर दास के कर कमलों द्वारा ही प्रत्योरोपित किये गये थे) बाबा का धुना उस समय वहीं लगा हुआ था। थाने में थानेदार नारायण सिंह जी मुडिया पुरा (किरावली, उत्तरप्रदेश) वाले जो बाद में चल कर "नारायणदास" नाम से बाबा के शिष्य हुए थे। रात्रि के करीब नौ बजे की बात है बाबा का धुना चला हुआ था। आसपास बाजार वाले बैठे हुए थे। मैं और मेरा भाई मन्नू लाल हलवाई दुकान बंद करके अपने घर को जा रहे थे। रास्ते मे मेरे भाई मन्नू लाल ने अपनी लालटिन नीचे

रखकर प्रणाम किया और मैंने बाबा के चरण स्पर्श किये मुझे वहाँ उपस्थित देखकर मन्नू और जगन कोठारी एवं अन्य व्यक्तियों ने बाबा से निवेदन किया कि हुजूर, मन्नू की बहु मर चुकी है और घर में कोई रोटी बनाने वाला भी नहीं है। इस लड़के (बृजू) की शादी होनी चाहिए। बाबा ने भी बात गौर से सुनी और मेरी तरफ देखा। थानेदार साहब को आवाज लगाई–दरबार इधर आओ।'' थानेदार साहब तुरन्त नीचे आये और बोले–हुजूर, हुक्म कीजिए। बाबा बोले–''पान मंगाओ।'' पं. फत्ते एवं परसादी पान वालों से पान मंगवाये गये, उनमें से बाबा ने दो पान मुझे दिये, थोड़ी देर वैठकर वहाँ से चल दिये। रास्ते में मेरे भाई ने मुझेसे पूछा कि कितने पान दिये हैं मैंने कहा–दो पान दिये हैं। उसे सन्तोप हुआ एक दो माह बाद मथुरा के अच्छे घराने से मेरी शादी सम्पन्न हो गयी। ऐसा बाबा के आशीर्वाद से हुआ।

संस्मरण 15

साधु भगवान गिरी को चमत्कार.....

वैर के उत्तरप्रदेश दिशा में भरतपुर दरवाजे बाहर पुरबनी वाली बगीची थी (वर्तमान में आज जहाँ रा.प्रा.विद्यालय नवीन स्चित है) वहाँ पर बाबा भगवान गिरी नाम के साधु रहा करते थे। वे अक्सर अपने यहाँ कथा कीर्तन आदि कार्यक्रम करवाया करते थे उन्होंने बीसों बार भागवत की और अनेक धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न कराये थे। छोटे-छोटे बच्चों को भोजन कराना एवं अनेक प्रकार के दान दक्षिणा कार्यक्रम वहाँ चलते रहते थे। लोगों में उनके प्रति काफी श्रद्धा थी। लोग दूर-दूर से उनके पास आया करते थे। उन्हें अनेकों प्रकार की जड़ी-बूटियाँ का ज्ञान था। विशेष रूप से ''अडीठ'' के इलाज के लिए प्रसिद्ध थे। उन्हें भूत-प्रेत, अलाय-बलाय आदि को दूर करने के मंत्र भी आते थे। इन सभी करणों से उनकी अधिक प्रसिद्धि हो गयी थी। वह जब बाबा मनोहर दास जी के पास आया करते थे तो बाबा उनका बहुत सम्मान किया करते थे। यहाँ तक कि उनके सम्मान में अपना आसन भी छोड़ दिया करते थे। बाबा अपने हाथ से सुलफे की चिलम बनाकर उन्हें दिया करते थे। इस प्रकार बाबा विशेष रूप से उन्हें सम्मान देते थे बाबा का प्रायः यह स्वभाव था कि वे सन्तों का बहुत सम्मान करते थे। यह उनकी महानता थी।

''सबही मानप्रद, आप अमानी'' तया, सावधान मानद मदहीना।

धीर धरम गति परम प्रर्वाना॥

के अनुसार महान संतों का यह स्वभाव होता है कि वे मानद अर्थात् सबको मान देने वाले आप मान न चाहने वाले (अमानी) होते हैं। बाबा ने भी उस सन्त का विशेष सम्मान किया। साधु भगवान गिरी इस सम्मान को सहन नहीं कर सका और उसके अन्तः करण में बढ़प्पन के अहंकार का उदय हो गया। वह अपने आप को बाबा से श्रेष्ठ मानने लगा। वह बाबा से तू तडाक की भाषा में बातें किया करता

था। एक बार बाबा कुछ भक्तों को लेकर उस साधु भगवान गिरी के यहाँ पहुँचे। बाबा को इस तरह भीड़ के साथ आया हुआ देखकर भगवान गिरी प्रसन्न नहीं हुआ और बोला–''अरे! तू पूरी बरात की बरात लेकर यहाँ आ जाया करता है।'' बाबा ने उससे कहा–कि ''हाँ साधु दुखिया लोग हैं आ जाया करते हैं।'' बाबा वहां विराज गये। रात्रि को विश्राम वहीं हुआ। साधु भगवान गिरी साधु भगवान गिरी बाबा से बोला–''साधु कुछ रोटी-बोटी खायेगा?'' बाबा बोले–''इच्छा है साधु तेरी।'' वह बाबा को एक मोटा सा टिक्कट बनाकर लाया। उस पर सब्जी रखी हुई थी। बाबा ने अपने हाथ में लेकर उसे पा लिया और रात्रि को अपने धूने पर विश्राम किया। यहाँ के रहने वाले भक्त गण अपने-अपने घरों को चले आये। बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं ने बाबा के पास इधर-उधर ही आसन लगाकर विश्राम किया। साधु भगवान गिरी अपनी कुटिया में चला गया और सो गया। रात्रि के लगभग दो बजे साधु भगवान गिरी लघु शंका के लिए कुटिया से बाहर आये उसने देखा, बाबा अपने धूने पर पड़े हुए हैं, उनके हाथ, पैर सिर तथा धड़ अलग-अलग पड़े हुए हैं। ऐसा देखकर साधु भगवान गिरी एक दम डर गये। सोचने लगे कि ''कोई सट्टे बाज, बाबा को मार गया है और अब मुझे पुलिस हत्या के आरोप में पकड़ेगी।'' साधु बहुत भयभीत हो गया। उसे शेष रात्रि नींद नहीं आयी। लगभग चार बजे बाबा ने भगवान गिरी को आवाज लगाई कि ''साधु सोता ही रहेगा क्या? चिलम तम्बाकू कहाँ है।'' आवाज सुनकर साधु भगवान गिरी तुरन्त बाहर आ गया और बाबा के चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। उसका अभिमान पूर्ण हो चुका था। वह अब बाबा श्री मनोहरदासजी के प्रभाव को जान गया था। इसके बाद वह जब भी बाबा के धूना पर जाता था। बाबा के चरणों में बैठा करता था और उनकी सेवा किया करता था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 16

शीशे का कमण्डल

एक बार एक फिरोजाबाद का कोई सेठ था। वह बाबा का भक्त था, वह बाबा के पास एक शीशे का कमण्डल भेंट देने लिए लाया था। अनेकों भक्त लोग धूने पर बैटे हुए थे। उनमें से एक बृज लाल भी था। कमण्डल इतना सुन्दर था कि मुझे बहुत अच्छा लगा। बाबा का प्रायः यह स्वभाव था कि कहीं से कोई वस्तु भेंट में आते थी तो बाबा उसे उठाकर चाहें जिसे दे दिया करते थे। मैं मन में सोचने लगा कि कमण्डल कितना सुन्दर है। अभी बाबा इसे किसी को दे देंगे और वह उसे व्यर्थ ही तोड़-फोड़ देगा। इसकी हिफाजत नहीं कर सेकगा। अगर यह कमण्डल बाबा मुझे दे दें, तो मैं इसे हिफाजत के साथ रखूं।

जब हम वहाँ से चलने लगे तो बाबा मुझ से बोले "छोरा। इसे ले जा, जहाँ तू सोता है उस कमरे की खूंटी पर हिफाजत से रखना"। मैंने समझ लिया कि बाबा अन्तर्यामी हैं। मेरे मन का भाव जानकर उन्होंने वह कमण्डल मुझे दे दिया।

उल्लेखनीय कि आज भी मेरे पास उनकी धरोहर रूप में सुरक्षित है। यह बत लगभग सन् 1953 की है। समय के प्रभाव से इस शीशे के कमण्डल का ऊपरी हत्था टूट गया है, बाकि सुरक्षित है।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 17

बाघम्बर की भेंट

एक बार कोई भक्त बाबा के लिए एक बहुत सुन्दर बाघम्बर और लकड़ी की आशा भेंट स्वरूप दे गया था। बाबा उस समय पुरबनी वाली बगीची में विराजे हुए थे। पास में अनेकों भक्तों का समुदाय था। बाबा ने वह बाघम्बर और वह आशा वहाँ पर बैठे हुए करौली निवासी डोंगा नाथ पटवा को दे दिया।

उल्लेखनीय है कि डोंगा नाथ पटवा बाबा का भक्त था। आगे चलंकर वह साधु हो गया। कहते हैं कि करौली में उसने बहुत ख्याति प्राप्त की जयपुर तक उसके चमत्कारों की धूम थी। वह समय-समय पर वैर आया करता और बाबा की सेवा किया करता था।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 18

मटा! अभी क्या देखा हैं

भुसावर निवासी प्रभुदयाल पाण्डेय बाबा की सेवा में आया जाया करते थे। एक बार उनकी लड़की मकान से गिर कर मर गयी। वह बहुत दुःखी हुए और वैर आकर बाबा से अपना दुःख निवेदन किया। बाबा बोले–"अभी क्या देखा है" कुछ दिन बाद उसका पुत्र भी मर गया। उसके सिर्फ एक पुत्री और एक पुत्र ही था। उन दोनों की मृत्यु के कारण उसको बड़ा भारी दुःख हुआ, वह बाबा के दरबार में पड़ा रहता था। उसे दुःखी देखकर बाबा ने आशीर्वाद दिया। बाबा बोले–"क्यों दुःखी होता है चिन्ता मत कर जोड़ा का जोड़ा ही आ रहा है "कुछ समय पश्चात उसके दो पुत्र हुए।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

संस्मरण 19

परहित में देह त्यागना

एक बार की बात है बाबा का धूना बयाना दरवाजे बाहर एक विशाल वट वृक्ष के नीचे शेढ के मढ के पास लगा हुआ था। उन दिनों पशुओं में रोग चल रहा था, रात-दिन पशु मरते जा रहे थे। बाबा ने स्थिति की गम्भीरता को देखा और कहा–''हमारे लोटे लेकर आओ।''

उल्लेखनीय है कि विशम्भर दयाल कबाले नवीश आगरे वाले ने बारह लोटे सिलवर के भेजे थे। ये लोटे भोला धाकड उठाकर ले गया था। उसके यहाँ पांच लोटे मिले, जो बाबा के पास लाये गये। बाबा ने उन पांचों लोटों को जल से भरवाया। एक लोटे का जल अपने ऊपर डाल लिया। दूसरा लोटा बड़ के पेड के ऊपर डलवा दिया तीसरा, पीपल पर और चौथा लोटा सेठ के ऊपर तथा पाचवां लोटा अपने शिष्य नारायण दास कोतवाल पर डलवा दिया। इस प्रकार बस्ती पर आयी हुयी बीमारी शान्त हो गयी लेकिन कुछ समय पश्चात वह बड़ तथा पीपल के पेड़ सूख गये। शीतला का रोग भी शान्त हो गया और कुछ समय पश्चात अपना शरीर छोड़ दिया। एक दिन मैंने बाबा से कहा–कि हुजूर आप इस पेड़ के नीचे विराजे हुए थे वह सूख गया। बाबा बोले–''अभी पेड़ सूखा नहीं है, हरा है तू देखकर आ।'' मैं जब उसे देखने गया तो उसमें एक डाली हरी बनी हुई थी बाकी पूरा देख कर आ।'' मैं अब उसे देखने गया कि उसमें एक डाली हरी बनी हुयी थी बाकी पूरा पेड़ सूखा हुआ था। बाबा से आकर मैंने सारी स्थिति वर्णन किया और बोले–''पेड हमारा लगा हुआ है, तू उसे काट-काट कर धूना पर ले आना। कुछ समय पश्चात् बाबा ने अपना शरीर छोड़ा। भण्डारे में लकड़ी की आवश्यकता पड़ी। साधुओं की जमातें इकट्ठी हुईं। सर्दी का समय था। लकड़ी की बहुत आवश्यकता थी, मुझे हुजूर के वचन याद आये। नारायण दास जी को बाबा के पश्चात् सर्व सम्मति से बाबा का उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया। श्री नारायण दास जी की आज्ञा के अनुसार मैं बड के पेड़ से लकड़ी लेने गया। जब हम बड़ की लकड़ी काट रहे थे। और दो गाड़ियों में लकड़ियों को लाद लिया तो द्वारिका प्रसाद जी नागायच ने हमको ऐसा करने से रोका और कहा–''इन्हें ले आइये अब मत आना।'' उन लकड़ियों की गाड़ियों को समाधि स्थान पर ले आये। भण्डारे का काम हुआ। साधुओं के लिए लकड़ी काम आयी। एक दो दिन पश्चात् ही द्वारिका प्रसाद नगाचय को कुछ स्वप्न हुआ। वह धूने पर आकर नारायण दासजी को उस बड़ की शेष लकड़ियों को ले जाने की कहा गये।

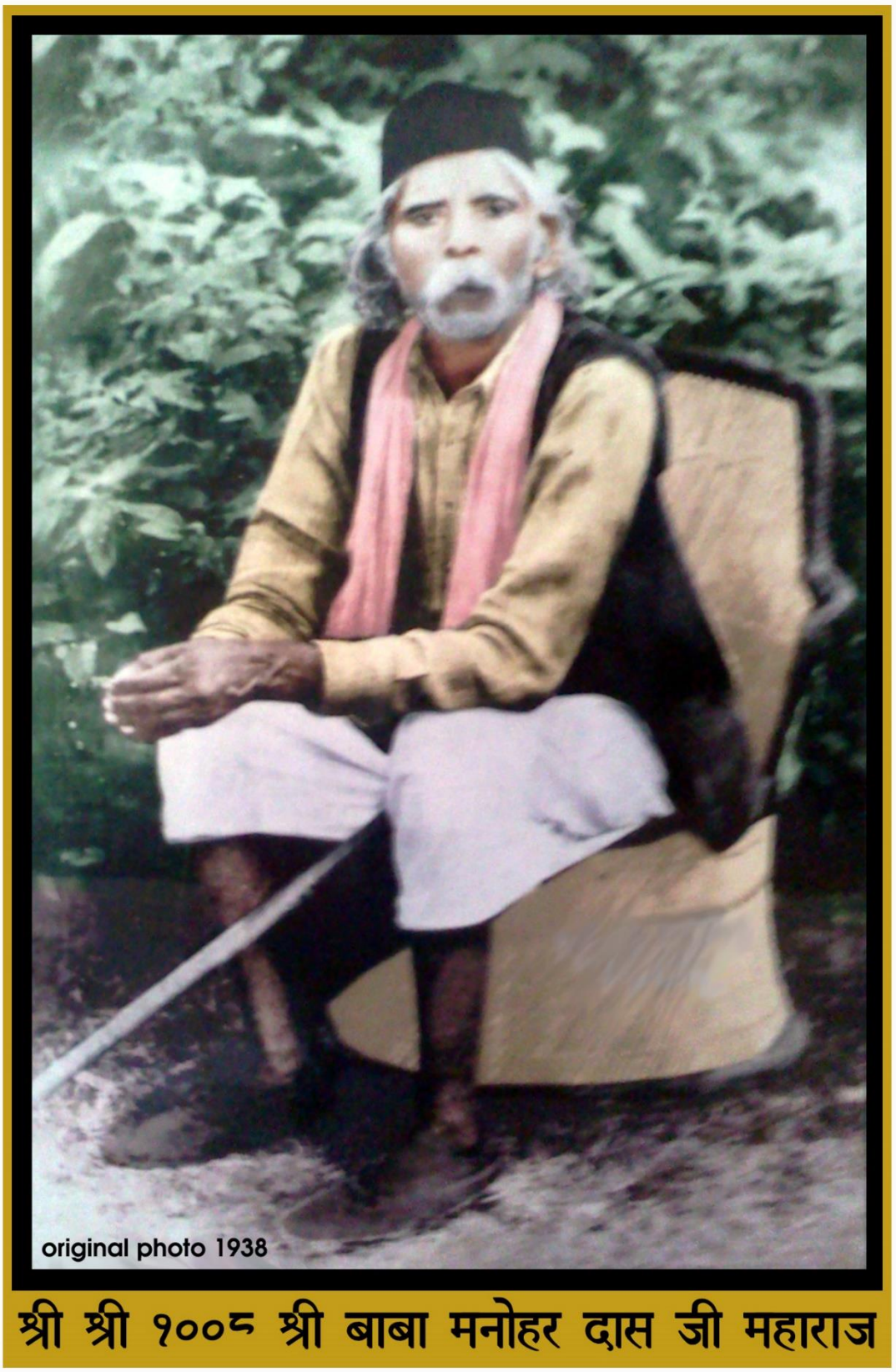

श्री श्री १००८ श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज